E Material

DEPARTMENT OF HINDI

CHITTARANJAN COLLEGE, KOLKATA=9

(ई सामग्री)

हिंदी विभाग,

चित्तरंजन कॉलेज, कोलकाता-9

HINDI CC-2

मानुष हौं तो वही रसखानि बसौं ब्रज गोकुल गाँव के ग्वारन।
जौ पसु हौं तो कहा बस मेरो चरौं नित नंद की धेनु मँझारन।
पाहन हौं तो वही गिरि को जो कियो हरिछत्र पुरंदर धारन।
जौ खग हौं तो बसेरो करौं मिलि कालिंदी कूल कदंब की डारन।

रसखान के सवैये भावार्थ :- प्रस्तुत पंक्तियों में कवि रसखान के श्री कृष्ण एवं उनके गांव गोकुल-ब्रज के प्रति लगाव का वर्णन हुआ है। रसखान मानते हैं कि ब्रज के कण-कण में श्री कृष्ण बसे हुए हैं। चूँकि रसखान को कृष्ण से बेहद लगाव है और रसखान कृष्ण के परम भक्त हैं इसलिए वे किसी भी परिस्थिति में कृष्ण से दूर रहना नहीं चाहते। इसी वजह से वे अपने प्रत्येक जन्म में ब्रज की धरती पर जन्म लेना चाहते हैं। अगर उनका जन्म मनुष्य के रूप में हो तो वो गोकुल के ग्वालों के बीच में जन्म लेना चाहते हैं। पशु के रूप में जन्म लेने पर वो गोकुल की गायों के साथ घूमना-फिरना चाहते हैं।

अगर वो पत्थर भी बनें तो उसी गोवर्धन पर्वत का पत्थर बनना चाहते हैं जिसे श्री कृष्ण ने इन्द्र के प्रकोप से गोकुलवासियों को बचाने के लिए अपनी उँगली पर उठाया था। अगर वो पक्षी भी बनें तो वो यमुना के तट पर कदम्ब के पेड़ों में रहने वाले पक्षियों के साथ रहना चाहते हैं जिस कदंब के पेड़ पर बैठकर श्रीकृष्ण बाँसुरी बजाते थे। इस प्रकार कवि चाहे कोई भी जन्म लें वो रहना ब्रज की भूमि पर ही चाहते हैं जो कृष्ण की भूमि है। वे किसी भी सूरत में ब्रज गांव से दूर नहीं रहना चाहते।

मोरपखा मुरली बनमाल, लख्यौ हिय मै हियरा उमह्यो री।
ता दिन तें इन बैरिन कों, कहि कौन न बोलकुबोल सह्यो री॥
अब तौ रसखान सनेह लग्यौ, कौउ एक कह्यो कोउ लाख कह्यो री।
और सो रंग रह्यो न रह्यो, इक रंग रंगीले सो रंग रह्यो री।

इन पंक्तियों में कवि रसखान ने कृष्ण के श्रृंगार का वर्णन किया है। रसखान कृष्ण के अनन्य भक्त है इसलिए कृष्ण के रूप सौंदर्य पर न्योछावर होना उनके लिए स्वाभाविक है। इन पंक्तियों में रसखान कहते हैं कि कृष्ण के सिर पे मोर पंख लगा हुआ है और उनके गले में मोतियों की माला विराजमान है जिसमें लगा हुआ बज्र नख उनके हृदय तक लटक रहा है। जिस दिन से रसखान ने कृष्ण की इस छवि को देख लिया है उस दिन से अब उनकी आंखें बैरन हो गई हैं, उन्हें और किसी की सुंदरता दिखती ही नहीं है। कृष्ण की इस मनमोहक छवि को देखकर रसखान को किसी दूसरे द्वारा सुझाई गई कोई छवि अच्छी नहीं लगती है। रसखान खुले हृदय से स्वीकार करते हैं कि अब उन्हें कृष्ण से स्नेह हो गया है लोग चाहे उनके बारे में अच्छा कहें या बुरा कहें इससे उन्हें कोई फर्क नहीं पड़ता है। वे कहते हैं कि कोई और रंग या किसी और की भक्ति का असर उन पर रहे या न रहे, इससे उन्हें कोई फर्क नहीं पड़ता है क्योंकि उनका कहना है कि कृष्ण के रंग में रगने के बाद उन्हें किसी और के रंग में रंगने की जरूरत ही नहीं है।

कंचन-मंदिर ऊँचे बनाइ कै मानिक लाइ सदा झलकैयत।
प्रात ही तें सगरी नगरी नग मोतिन ही की तुलानि तुलैयत।
जद्यपि दीन प्रजान प्रजापति की प्रभुता मधवा ललचैयत।
ऐसे भए तौ कहा रसखानि जौ साँवरे ग्वार सौं नेह न लैयत।।20।।

प्रस्तुत सवैये में रसखान ने निश्छल भक्ति के लिए काम, क्रोध, लोभ, मोह को त्याग कर मन को साफ करने का संदेश दिया है। उनका कहना है कि यदि कोई सोने का मंदिर बनाये और उसमें हीरे-मोती-मानिक सजाये तो इससे भगवान की प्राप्ति नहीं हो सकती। क्यों कि भगवान अपने लिए कभी ऐशा-आराम अर्थात सोने-चाँदी, हीरे-मोती, माणिक नहीं चाहते हैं। जो व्यक्ति अपने धन के दंभ का दिखावा करते हैं और प्रात: होते ही सारे नगर में घूम-घूम कर अपने ऐश्वर्य का बखान करते फिरते हैं, हमेशा अपने धन के आगे दूसरों को नीचा दिखाने की कोशिश करते हैं। उसे मोक्ष की प्राप्ति कभी नहीं हो सकती। अगर आपके आस-पास के लोग दीन-हीन और गरीब हैं और उसकी मदद करने के बजाय वह केवल अपने ऐशा-आराम की सोचता है। जो व्यक्ति ऐसे होते हैं, रसखान की नजर में वे भगवान की भक्ति को कभी प्राप्त नहीं कर सकते। क्योंकि भगवान ऐसे जगह कभी नहीं विराजते जहाँ ऐशो-आराम हो, दूसरों को नीचा दिखाने की भावना हो, मन काम, क्रोध, लोभ, मोह से ग्रस्त हो। रसखान का कहना है कि सारी ऐशा-आराम की चीजें पाकर भी मानव जीवन सफल नहीं हो सकता यदि कृष्ण से नेह या भक्ति न की जाय अर्थात रसखान का कहना है कि जब तक जीवन में नि:स्वार्थ भक्ति का आगमन न होगा तब तक जीवन सफल नहीं हो सकता और न ही उसे मोक्ष की प्राप्ति हो सकती है।

कान्ह भये बस बाँसुरी के, अब कौन सखी हमको चहि है।
निसि द्यौस रहे यह आस लगी, यह सौतिन सांसत को सहि है।
जिन मोहि लियो मनमोहन को, 'रसखानि' सु क्यों न हमैं दहि है।
मिलि आवो सबै कहुं भाग चलैं, अब तो ब्रज में बाँसुरी रहि है।।।।8।।

प्रस्तुत पंक्ति में रसखान ने गोपियों के उलाहना का चित्रण किया है। कृष्ण को अपनी बाँसुरी से बेहद लगाव है। जब वे बाँसुरी बजाते हैं तो गोपियों को भी भूल जाते हैं। इसलिए उक्त पंक्ति में गोपी या राधा अपनी सहेलियों से कहती है कि कृष्ण अब बाँसुरी के बस में हो गए हैं अब उन्हें हमारी जरूरत नहीं है क्योंकि जब वे बाँसुरी को अपने होंठों से लगाते हैं तो हम गोपियों को भूल जाते हैं। अत: हमारी अब इस गोकुल गांव में कोई जरूरत नहीं है। हमें यहाँ चाहने वाला कोई नहीं है। रात-दिन कृष्ण इसी बाँसुरी से चिपके रहते हैं। यह बाँसुरी अब हमारी सौतन हो गई है जिसके प्रेम में पड़कर कृष्ण हम गोपियों को भूल बैठे हैं। गोपी कहती है जिस बाँसुरी ने कृष्ण को मोह लिया है, जिस बाँसुरी ने कृष्ण को अपने वश में कर लिया है उस बाँसुरी से हम क्यों न ईर्ष्या करें क्योंकि वह हमेशा कृष्ण के होठों से लगी रहती है और हमें हमेशा जलाती रहती है। गोपियां कहती हैं कि जो बाँसुरी हमारे कृष्ण को अपने मोहपाश में बांध ली है उस बाँसुरी से हम ईर्ष्या न करें तो क्या करें। इसलिए गोपियां कहती हैं कि हे सखी चलो हम सब इस ब्रज को छोड़कर कहीं दूसरी जगह चले चलते हैं। कृष्ण को जब हमारी चिंता ही नहीं है तो हम गोपियां उनकी चिंता क्यों करें। अत: हमारा यहां से चले जाना ही अच्छा है क्योंकि अब तो ब्रज में हम गोपियों की जगह इस बांसुरी ने ले लिया है।

फागुन लाग्यौ सखि जब तें, तब तें ब्रजमंडल धूम मच्यौ है।
नारि नवेली बचैं नहिं एक बिसेख यहै सबै प्रेम अच्यौ है।
साँझ सकारे वही रसखानि सुरंग गुलाल लै खेल रच्यौ है।
को सजनी निलजी न भई अब कौन भटू जिहिं मान बच्यौ है।

इन पंक्तियों में रसखान ने ब्रज की होली का चित्रण किया है। ब्रज में फागुन का महीना आते ही होली का उत्सव शुरू हो जाता है। चारों ओर खुशियों का माहौल छाया रहता है। सभी ब्रजवासी होली के रंग में रंग जाते हैं। रसखान ने इन पंक्तियों में कहा है कि गोपी अपनी सखी से कहती है कि हे सखी जब से फागुन का महीना आया है या फागुन की हवा चली है तब से पूरे ब्रजमंडल में होली की धूम मची है। चारों ओर रंग और गुलाल ही उड़ रहे हैं। चारों ओर यह धूम मची है कि कोई भी नयी-नवेली दुल्हन इस रंग में रंगने से बचनी नहीं चाहिए। सभी को होली के रंग में रंग कर सराबोर करनी है। होली की ऐसी धुम मची है कि सुबह हो या शाम हर समय लोगों के हाथ में रंग और गुलाल ही देखने को मिलता है। सभी अपने-अपने हाथों में रंग-गुलाल लेकर दौड़ते-भागते और एक-दूसरे को गुलाल में रंगते ही दिखते हैं। रसखान का कहना है कि गोपियां रंग और गुलाल के रंग कर लाज-शर्म का घूंघट भी छोड़ चुकी हैं अत: गोपियों अपनी सहेलियों से कहती है कि हे सखी अब शर्म करने की कोई बात नहीं है क्योंकि कृष्ण के रंग में रंगकर हम सभी ने अपने आप को कृष्ण के प्रति न्योछावर कर दिया है तो अब शर्म करने से क्या फायदा। हमारी लाज-शर्म तो कृष्ण के रंग में रंगते ही खत्म हो गई है। अब कौन सा लाज-मान बचा है जो हम उसे बचाने की कोशिश करें।

सोहत है चंदवा सिर मौर के जैसियै सुंदर पाग कसी है।
तैसियै गोरज भाल बिराजति जैसी हिये बनमान लसी है।।
रसखानि बिलोकत बौरी भई दृग मूंदि कै ग्वाल पुकारि हंसी है।
खोलि री घूंघट खोलौं कहा वह मूरति नैनन मांझ बसी है।।

इन पंक्तियों में रसखान ने कृष्ण की सुंदरता का चित्रण किया है। कृष्ण के श्रृंगार का वर्णन करने में कृष्ण भक्त रसखान का अद्‌वितीय स्थान है। इन पंक्तियों में रसखान कहते हैं कि कृष्ण के सिर पर चंदवा की शोभा ऐसी लग रही है जैसे मानो साक्षात चंद्रमा उतर आया हो। जैसा उनके माथे पर चंदवा शोभायमान है वैसी ही सुंदर उनकी पाग भी कसकर बंधी हुई है। अर्थात उनके पाग में लगा हुआ चंदवा की सुंदरता शोभायमान है। उनके मस्तक पर लगा हुआ गोरज का तिलक तथा उनके हृदय तक लटकता हुआ बनमाल की माला भी उनकी सुंदरता में चार चांद लगा रही है। रसखान कहते हैं कि कृष्ण की इस श्रृंगारिक छवि को देखकर आंखें भी बैरन या दुश्मन हो जाती हैं। वे भी अपना साथ नहीं देतीं। कृष्ण की सुंदरता देखकर गोलियां अपनी आंखें मुंद लेती हैं। उन्हें डर है कि कहीं कृष्ण की यह मनमोहक छवि उनकी आंखों से निकल न जाय। इसलिए गोपियां अपनी आंखें मूंदकर घूंघट के भीतर ही भीतर हँसती हैं लेकिन अपनी आंखें मूंदे रहती हैं क्योंकि की कृष्ण की इस छवि को वे अपनी आंखों से निकलने नहीं देना चाहती हैं।